श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ज्ञान प्राप्ति यह तो साधन है साद्य तो एकमात्र..... का क्षयोपशम ।
२. राजस्थान ने प्रसंगोपात.....और त्यागीयो की अमुल्य भेट धरी है ।
३. चौदहवें गुणस्थानक के अंतिम समये खपाती बहत्तर प्रकृतियाँ मुक्तिनगर के द्वार के ..... समान है ।
४. सत्वशाली उपासकों को ..... और क्षेम देनेवाली हे देवी ! तुम्हें नमस्कार हो ।
५. ..... ग्रंथ के द्वारा धर्मघोष सूरि को अपूर्व कीर्ति प्राप्त हुई है ।
६. संपति और सत्ता के अभिमान से सुवर्ण की लंका का स्वामी..... में चला गया ।
७. पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और नारकियों में एक.....वेद होता है ।
८. अयोगी गुणस्थान वर्ती परमेष्ठी हैं वे खुद के ..... में अत्यंत आनंद मनाते हैं, अतः उसे ध्यान कहने है में कुछ अयोग्य नहीं ।
९. जाति मद के कारण..... चांडाल कुल में जन्मे थे ।
१०. ..... रखने की अनिष्ट प्रथा को निर्मूल करवाने का श्रेय धर्मघोष सूरि के हिस्से में जाता है ।
११. ..... ध्यान मुक्त महल के प्रवेशद्वार समान है ।
१२. गर्भज तिर्यचों की..... सभी दंडको में होती है ।
१३. ..... को सदा निरुपद्रवी वातावरण, तुष्टि और पुष्टि देने वाली हे देवी तुम जय पाओ ।
१४. अयोगी गुणस्थान पर..... है फिर भी वे अयोगी कहलाते है ।
१५. जीवन में हमें क्या मिला? क्या नहीं मिला ? यह महत्व का नहीं है पर जो मिला उसके द्वारा.....कितना साधा ?
१६. ..... वाले जीवों को धृति, रति, मति और बुद्धि देने में सदा तत्पर रहने वाली हे देवी तुम जय पाओ ।
१७. तेउकाय और वायुकाय की गति पृथ्वीकायादि..... में होती है ।
१८. ..... ने एक साथ बीस शिष्यों को आचार्य पद पर प्रस्थापित किया ।
१९. सूक्ष्म काय योग में रहकर पर्वत की तरह स्थिर रहना यही ..... है ।
२०. क्षणिक ऐश्वर्य का मद करके भवातंर के लिये..... का उपार्जन नहीं करना चाहिये । १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. किस मद के कारण से प्रभु महावीर ब्राह्मण कुल में आये ?
२. किसे नमन करने वाली जनता को देवी लक्ष्मी संपति कीर्ति यश में वृद्धि कर देती है ?
३. किस मंत्र के प्रभाव से धर्मघोष सूरि ने हरिया के शरीर में से विष दूर किया ?
४. सयोगी गुणस्थानक के अंत में अवगाहना कितनी करते हैं ?
५. किसका उदय हमारे सामान्य सपनो को भी साकार होने नहीं देता ?
६. धर्मघोष सूरि की कारकिर्दि का मुख्य अंग क्या है ?
७. चौदहवे गुणस्थानक की स्थिति कौन से पाँच ह्रस्वास्वर बोले उतनी होती है ?
८. पुन्य से प्राप्त हुई वस्तु का अभिमान करने से भवांतर में वो वस्तु क्या बन जाती है ?
९. पृथ्वीकायादि दस स्थानक के जीवों की गति किनके तीन दंडक में होती है ?
१०. किस श्रेष्ठि ने धर्मगोषसूरि के उपदेश से खुद के इक्कीस मित्रों के साथ दीक्षा ली ?
११. देवी सिद्धि शांति और परम प्रमोद किसे देती है ?
१२. तेउकाय, वायुकाय किस दंडक रुप में उत्पन्न नहीं होते ?
१३. सयोगी गुणस्थान में किस कर्म का बंध होता है ?
१४. ऐश्वर्य मद किसने किया था ?
१५. बोहडी की उच्च सेवाओं के उपलक्ष में मंत्री वस्तुपाल तेजपाल ने कौनसा बिरुद प्रदान किया ? १०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) त्रयोदश २) धृति ३) प्रददे ४) शिव ५) व्दिसप्ततिम ६) इत्थी ७) वेय ८) निरतानां ९) प्रदानाय १०) जंति ११) श्वापद १२) विगलाई १३) स्वस्ति १४) श्री १५) थिर १६) जीयाः १७) चउविह १८) अेगो १९) तुभ्यं २०) इति

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - **१०**

A	B	A	B
१) तिमिपुर	१) सिद्ध पर्याय	६) शरीर ६ फुट	६) अनशन
२) मति	२) स्त्री पुरुष दो ही वेद	७) मुक्ति	७) छठी नरक
३) सुभुभ चक्रवर्ती	३) शुभ	८) दुर्गति	८) लाभमद
४) देवों के तेरा दंडक	४) सिद्ध अवगाहना ४ फुट	९) कोणिक	९) रचनात्मक अभिगम
५) शतपदी	५) कुल मद	१०) कनिष्ठ उपासक	१०) विचार शक्ति

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - **१०**

१. चौदवे गुणस्थानक के अंत में कितनी प्रकृति का क्षय करके केवली मुक्ति में जाते है ?
२. एक आचार्य ने मन में गर्व धारण करके कितने पूर्व पक्ष खडे किये ?
३. एक ही नपुंसक वेद कितने दंडक में है ?
४. भय कितने प्रकार के हैं ?
५. अयोगी गुणस्थानक के उपांत्य समय में समकाल में केवली कितने स्पर्श खपाता है ?
६. कुल मद कितने हैं ?
७. चक्रवर्ती की सेवा में कितने देव हाजर थे ?
८. शांतिनाथ भगवान को नमन करन वाली जनता को देवी कितनी वस्तु देती है ?
९. गर्भज तिर्यंचो की गति आगति कितने दंडक में होती है ?
१०. महावीर स्वामी कितनी रात ब्राह्मण कुल में रहे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - **१०**

१. अष्टांग योग ध्यान है वह निश्चय ध्यान है ।
२. जेताशाह ने देड लाख टंक खर्च करके जेता जिन प्रासाद बनाया ।
३. तिर्यंच और मनुष्य को तीन वेद होते हैं ।
४. बुद्धि याने सही-गलत का निर्णय करने की निर्णयात्मक शक्ति ।
५. पुण्य है तब तक ही ऐश्वर्य है, पुण्य के नाश के साथ ऐश्वर्य का नाश निश्चित है ।
६. आर्यरक्षित सूरि के समय में आचार्यो की संख्या बावीस की थी ।
७. सयोगी गुणस्थानक में पिच्यासी प्रकृति की सत्ता होती है ।
८. देदा शाह की बहन ने भोजन में विष मिलाकर त्यागीयों की जिंदगी का अंत लाने का षडयंत्र रचा था ?
९. संमुर्च्छिम मनुष्य सभी दंडको में उत्पन्न होते हैं ?
१०. नमो नमो हाँ ह्रीं ह्रुं ह्रः यः क्षः ह्रीं फूट फूट स्वाहा यह अेक प्रकार का षोडशी मंत्र है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - **१०**

१. सूक्ष्म काय योग का भी अभाव हो तो ध्यान किस तरह संभवित है ?
२. हे भगवती तुम्हारी शक्ति परापर रहस्य द्वारा जगत में जय पाती हैं, इसलिये तुम्हें नमस्कार हो ।
३. धर्म आराधना करते वक्त भी आ जाते मद से अनेक आत्मायें मार्ग भूली हैं।
४. व्रत ग्रहण करने के पश्चात नवोदित मुनि ने अध्ययन क्षेत्र में अग्रीम सिद्धियाँ हासिल की ।
५. "यह सैन्य किसके उपर चढाई करने जा रहा है" ।
६. भूत, पिशाच तथा शाकिनीयों के उपद्रव में से रक्षण कर, रक्षण कर ।
७. किसी भी प्रकार का अभिमान, गर्व करने से पहले सोचने जैसा है कि इसका परिणाम क्या आयेगा ।
८. बाकी कर्मो का क्षय होते ही एक समय में आत्मा सिद्धशीला पर पहुँच जाती है ।
९. विकलेन्द्रिय तीन दंडक की गति पृथ्वीकायादि दस पदों में होती है ।
१०. मनचाहे पुनर्जीवन की चाहत में इहलोक और इहजीवन को समाप्त कर देने वालों को उन्होंने उपदेश दिया और मानवभव का महात्म्य सबको समझाया ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - **१५**

१. गति आगति द्वार २) भय उपद्रव शांति प्रार्थना समझाओ ३) जीवन में मद का स्थान और परिणाम
४. सूक्ष्म काययोग समझाओ ५) शतपदी और उसका अंतिम अध्ययन ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com